

Dr. Sarita Devi

Assistant Professor (Guest)

Department of Psychology

Maharaja College, Ara

U.G. semester-4,

MJC- 5 (Abnormal Psychology)

Unit-3

मनोग्रसित बाध्यता विकृति

Obsessive compulsive disorder or OCD

आरंभ में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों (clinical psychologist) तथा मनश्चिकित्सकों (psychiatrists) का विचार था कि **मनोग्रस्ता (obsession)** तथा **बाध्यता (compulsion)** दो स्वतंत्र रोग हैं। परंतु बाद के अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया कि यह दोनों स्वतंत्र रोग नहीं हैं बल्कि एक ही विकृति (disorder) के दो पहलू (side) हैं। रोगी में कभी एक पहलू प्रधान होता है तो कभी दूसरा पहलू प्रधान होता है और कभी-कभी यह देखा गया है कि यह दोनों पहलू एक ही रोगी में संतुलित रूप से समान मात्रा में दिखलाई देते हैं। इस रोग की इन दोनों पहलुओं को समझने के लिए हम इसका वर्णन अलग-अलग निम्नांकित ढंग से करेंगे -

मनोग्रस्ता (obsession)

यह एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें रोगी बार-बार किसी अतार्किक एवं असंगत विचारों को न चाहते हुए भी मन में दोहराते रहता है। दूसरे शब्दों में, रोगी यह समझता है कि उसके ऐसे विचार अर्थहीन (meaningless) एवं अतार्किक (illogical) स्वरूप का है और उनसे छुटकारा भी पाना चाहता है परंतु वह लाचार रहता है और विचार बार-बार उसके मन में आकर उसमें मानसिक अशांति उत्पन्न करते रहता है। इन बातों के विश्लेषण से निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं -

(i) मनोग्रस्ता (obsession) का संबंध विचार या चिंतन से होता है।

(ii) ऐसे विचार या चिंतन बेतुका (absurd) एवं अर्थहीन (meaningless) होते हैं।



Edit with WPS Office

(iii) ऐसे विचार या चिंतन का स्वरूप पुनरावर्ती (repetitive) होता है तथा रोगी के मन में बार-बार आकर उसकी मानसिक शांति को भंग करता है।

(iv) चाहकर भी रोगी ऐसे विचारों एवं चिंतनों को मन में बार-बार आने से रोक नहीं पाता है मतलब, रोगी को ऐसे विचार पर कोई नियंत्रण (control) नहीं रहता है।

बाध्यता (compulsion)

यह एक ऐसी अवस्था होती हो जिसमें रोग अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी क्रिया को बार-बार करते रहने के लिए बाध्य रहता है। ऐसी क्रियाएं अवांछित ही नहीं बल्कि अतार्किक एवं असंगत भी होती है। दूसरे शब्दों में, बाध्यता (compulsion) से ग्रसित व्यक्ति एक ही कार्य को बार-बार करता है हालांकि वह यह महसूस करता है कि ऐसा करने का कोई अर्थ नहीं है।

जैसे - साफ-सुथरे हाथ को बार-बार धोने का व्यवहार, ताला ठीक ढंग से लगा रहने पर भी उसे बार-बार झकझोर कर देखना, सड़क पर खड़े होकर अकारण ही आते जाते गाड़ियों का नंबर नोट करना, किसी चीज को चुराने की बाध्यता, आग लगाने की बाध्यता आदि बाध्यता के कुछ उदाहरण है।

इन बातों के विश्लेषण से निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं -

(i) बाध्यता (compulsion) का संबंध व्यक्ति द्वारा की गई क्रिया या व्यवहार (behaviour) से होता है।

(ii) बाध्यता में व्यक्ति द्वारा की गई क्रियाएं (activity) अवांछित ही नहीं बल्कि अतार्किक (illogical) एवं असंगत (irrelevant) भी होता है।

(iii) ऐसी क्रिया या व्यवहार का स्वरूप पुनरावर्ती (repetitive) होता है। रोगी बार-बार एक ही क्रिया को दोहराते रहता है क्योंकि ऐसा नहीं करने पर उन्हें अशांत (uneasy) एवं अप्रीतिकर (uncomfortable) महसूस होता है।

Obsessive compulsive disorder (OCD) या मनोग्रसित बाध्यता विकृति के कारण (etiology)

OCD कारणों की व्याख्या कई सिद्धांतों द्वारा की गई है जिनमें निम्नांकित प्रमुख है -

1. जैविक सिद्धांत या कारक (Biological theories or factors)
2. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत या कारक (Psychoanalytic theories or factors)
3. व्यवहारात्मक सिद्धांत या कारक (Behavioural theories or factors)
4. संज्ञानात्मक सिद्धांत या कारक (Cognitive theories or factors)

1. जैविक सिद्धांत या कारक (Biological theories or factors)



अब तक किए गए शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि OCD की उत्पत्ति में जैविक कारकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। ऐसा देखा गया है कि रोगी के लगभग 30% संबंधियों में भी OCD का रोग था। जैवमेडिकल शोधकर्ताओं (biomedical researchers) का यह दावा है कि OCD एक मस्तिष्कीय रोग (brain disease) है तथा इसके उत्पन्न होने में इनसेफालीटिस (encephalities), सिर में चोट (head injuries), मस्तिष्कीय ट्यूमर (brain tumor) की भी अहमियत पाई गई है। इस क्षेत्र की विशेषज्ञों विशेषकर मानश्रिकित्सकों का मत है कि जब कोई रोग विशेष औषधि (drug) से कम होता है या लगभग समाप्त हो जाता है तो इससे अपने आप यह निष्कर्ष निकालता है कि रोग का कुछ जैविक आधार है।

2. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत या कारक (Psychoanalytic theories or factors)

इस सिद्धांत के अनुसार, अवांछनीय इच्छाएं एवं विचार जो दमित (repressed) होकर व्यक्ति के अचेतन (unconscious) में होते हैं, चेतन (conscious) में आने की कोशिश करता है, तो इससे व्यक्ति एक सुरक्षात्मक उपायों (defence mechanism) को ढूंढता है और इस सुरक्षात्मक उपाय के रूप में वह OCD के लक्षणों को विकसित कर लेता है। दूसरे शब्दों में, जिन व्यक्तियों के अचेतन में दमित, संघर्ष (conflict) उत्पन्न करने वाली चिंता अत्यधिक होगी उनमें OCD उत्पन्न होने की संभावना अधिक होती है।

3. व्यवहारात्मक सिद्धांत या कारक (Behavioural theories or factors)

इस सिद्धांत के अनुसार, OCD को एक सीखी गयी विकृति माना गया है जो विशेष तरह के परिणामों से पुनर्बलित (reinforce) होता है। इस रोग में, रोगी की कुछ चिंताएं या विचार ऐसे स्वरूप की होती हैं जो न चाहते हुए भी रोगी अपने मन में दोहराते रहता है। रोगी ऐसे विचारों से छुटकारा पाना चाहता है परंतु वह लाचार रहता है और ऐसे विचार बार-बार आकर उसकी मानसिक शांति को भंग कर देता है। तब रोगी ऐसे मनोग्रसित चिंतन (obsessional thinking) से मुक्ति पाने के लिए कुछ ऐसे व्यवहार को बार-बार करने लगता है जो उसके ऐसे विचार को कम करने में मदद करता है। और तब रोगी कोई क्रिया बार-बार करने का प्रबल दवाव महसूस करने लगता है। ऐसा व्यवहार बार-बार करने से रोगी में बाधित व्यवहार विकसित हो जाता है।

4. संज्ञानात्मक सिद्धांत या कारक (Cognitive theories or factors)

इस सिद्धांत के अनुसार, जब व्यक्ति किसी ऐसी परिस्थिति में होता है जिसमें कुछ अवांछनीय या खतरनाक परिणाम उत्पन्न होने की थोड़ी सी संभावना होती है और जब व्यक्ति इस तरह के परिणाम का अतिआकलन (over estimate) करता है तो उसमें OCD के लक्षण उत्पन्न होने की संभावना अधिक बढ़ जाती है। दूसरे शब्दों में, अतिआकलन का संज्ञानात्मक सेट (cognitive set) व्यक्ति को उस तरह की परिस्थिति से दूर हटने की प्रवृत्ति उत्पन्न करता है और इस तरह से उसमें OCD के उत्पन्न होने की संभावना तीव्र जाती है।

OCD का उपचार (treatment)

OCD के उपचार के लिए कई तरह की चिकित्सीय प्रविधियों (therapeutic techniques) का प्रावधान किया गया है



जिसमें निम्नांकित तीन प्रमुख हैं -

1. मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा (Psychoanalytic therapy)
2. व्यवहार चिकित्सा (Behaviour therapy)
3. औषधि चिकित्सा (Drug therapy)

1. मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा (Psychoanalytic therapy)

इस तरह की चिकित्सा में रोगी के अचेतन मन में दमित मानसिक संघर्ष की पहचान करने की कोशिश की जाती है। इस चिकित्सीय प्रविधि में रोगी की सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाओं का विस्तृत विश्लेषण किया जाता है और उसकी मानसिक संघर्ष की उत्पत्ति के कारणों में उसकी सोच विकसित की जाती है। दूसरे शब्दों में, जब रोगी को रोग के कारण की उत्पत्ति में सूझ विकसित हो जाती है और रोग के लक्षण लगभग समाप्त होते दिखते हैं।

2. व्यवहार चिकित्सा (Behaviour therapy)

OCD के उपचार में व्यवहार चिकित्सा की भूमिका काफी सराहनीय रही है। OCD के उपचार में व्यवहार चिकित्सा के तीन प्रविधियों अर्थात मॉडलिंग(modeling), फ्लडिंग (flooding), तथा अनुक्रिया निवारण (response prevention) को संयोजित करके उसका उपयोग OCD के उपचार में सफलतापूर्वक किया गया है। इन तीनों प्रविधियों का संयुक्त उपयोग बार-बार हाथ धोने की बाधित व्यवहार को दूर करने में अधिक सफलतापूर्वक किया गया है।

3. औषधि चिकित्सा (Drug therapy)

OCD के उपचार में कुछ औषधि (drug) की गुणकारी प्रभाव करते देखे गए हैं जिसके सेवन से OCD के लक्षण समाप्त होते दिखते हैं। कुछ अध्ययनों में यह पाया गया है कि बहुत से रोगी इस औषधि के सेवन से भी ठीक नहीं हो पाते हैं तथा कई रोगी तो इस औषधि को उसकी पार्श्व प्रभाव (side effect) के डर से सेवन नहीं करते हैं।





Edit with WPS Office